अध्याय 4: भारत में औपनिवेशिक काल

प्रश्न और क्रियाकलाप

प्रश्न 1. उपनिवेशवाद क्या है? इस अध्याय या अपनी जानकारी के आधार पर तीन विभिन्न परिभाषाएँ दीजिए।

उत्तर: उपनिवेशवाद की परिभाषाएँ:

1. जब कोई शक्तिशाली देश किसी दूसरे देश पर शासन करता है, उसे उपनिवेशवाद कहते हैं।
2. किसी देश के संसाधनों, व्यापार और लोगों पर विदेशी शक्ति का नियंत्रण उपनिवेशवाद कहलाता है।
3. जब विदेशी शासक अपने लाभ के लिए किसी देश की राजनीति, अर्थव्यवस्था और समाज को नियंत्रित करते हैं, तो उसे उपनिवेशवाद कहते हैं।

प्रश्न 2. उपनिवेशवादी शासक प्रायः यह दावा करते थे कि उनका उद्देश्य शासित लोगों को 'सभ्य' बनाना था। इस अध्याय में प्राप्त प्रमाणों के आधार पर बताइए कि क्या भारत के संदर्भ में यह सत्य था? क्यों या क्यों नहीं?

उत्तर:

- भारत के संदर्भ में यह दावा पूरी तरह सत्य नहीं था।
- अंग्रेजों का मुख्य उद्देश्य भारत को सभ्य बनाना नहीं, बल्कि आर्थिक लाभ कमाना था।
- उन्होंने भारत से कच्चा माल लिया और अपने बने सामान यहाँ बेचे।
- किसानों, कारीगरों और व्यापारियों का शोषण हुआ।
- शिक्षा, रेल और कानून जैसी व्यवस्थाएँ भी मुख्यतः अंग्रेजी शासन को मजबूत करने के लिए थीं।
- इसलिए 'सभ्य बनाने' का दावा केवल दिखावा था।

प्रश्न 3. भारत को उपनिवेश बनाने की ब्रिटिश नीति पूर्ववर्ती यूरोपीय शक्तियों जैसे पुर्तगाली या फ्रांसीसी से किस प्रकार भिन्न थी?

उत्तर:

- पुर्तगाली और फ्रांसीसी मुख्यतः व्यापार और समुद्री क्षेत्रों तक सीमित रहे।
- ब्रिटिशों ने धीरे-धीरे पूरे भारत पर राजनीतिक नियंत्रण स्थापित किया।
- उन्होंने युद्ध, संधि और 'फूट डालो और राज करो' की नीति अपनाई।
- ब्रिटिशों ने प्रशासन, सेना, कानून, शिक्षा और अर्थव्यवस्था को अपने नियंत्रण में ले लिया।
- इसलिए ब्रिटिश उपनिवेशवाद अधिक संगठित और व्यापक था।

प्रश्न 4. "भारतीयों ने अपने ही दमन का खर्च उठाया।" रेलवे एवं टेलीग्राफ जैसी ब्रिटिश आधारभूत संरचना परियोजनाओं के संदर्भ में इस कथन का क्या तात्पर्य है?

उत्तर:

- रेलवे और टेलीग्राफ का खर्च भारत के धन से किया गया।
- इनका उपयोग अंग्रेजों ने अपने शासन को मजबूत करने में किया।
- रेल से कच्चा माल बंदरगाहों तक पहुँचाया गया।
- टेलीग्राफ से विद्रोहों और आंदोलनों पर जल्दी नियंत्रण किया गया।
- इस प्रकार भारतीयों के पैसे से बनी सुविधाएँ उन्हीं पर शासन करने में प्रयोग की गईं।
- इसलिए कहा गया कि भारतीयों ने अपने ही दमन का खर्च उठाया।

प्रश्न 5. 'फूट डालो और राज करो' वाक्यांश का क्या अर्थ है? भारत में ब्रिटिश शासन द्वारा इसे किस प्रकार प्रयोग में लाया गया, उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: लोगों को धर्म, जाति, क्षेत्र या वर्ग के आधार पर बाँटकर शासन करना 'फूट डालो और राज करो' कहलाता है।

ब्रिटिश प्रयोग:

- अंग्रेजों ने हिंदू-मुस्लिम एकता को कमजोर करने का प्रयास किया।
- अलग-अलग समुदायों को अलग राजनीतिक अधिकार दिए गए।
- रियासतों और भारतीय शासकों को आपस में लड़ाया गया।
- 1857 के विद्रोह के बाद अंग्रेजों ने भारतीयों को एकजुट होने से रोकने की नीति अपनाई।

उदाहरण: अलग निर्वाचन व्यवस्था ने समुदायों के बीच दूरी बढ़ाई।

प्रश्न 6. भारतीय जीवन के किसी एक क्षेत्र को चुनिए, जैसे- कृषि, शिक्षा, व्यापार या ग्रामीण जीवन। उपनिवेशवादी शासन ने उसे किस प्रकार प्रभावित किया? क्या आज भी उन परिवर्तनों के कुछ चिह्न दृष्टिगोचर होते हैं? अपने विचारों को एक लघु निबंध, कविता या चित्र के रूप में व्यक्त कीजिए।

MUKUTclasses

उत्तर:

क्षेत्र: कृषि

ब्रिटिश शासन ने भारतीय कृषि को बहुत प्रभावित किया। किसानों से भारी लगान वसूला गया। उन्हें खाद्यान्न फसलों के स्थान पर नील, कपास और अफीम जैसी नकदी फसलें उगाने के लिए मजबूर किया गया। इससे किसानों की आर्थिक स्थिति कमजोर हो गई। कई बार किसानों को कर्ज लेना पड़ता था। फसल खराब होने पर भी लगान देना पड़ता था। इससे ग्रामीण जीवन में गरीबी बढ़ी। आज भी कुछ क्षेत्रों में किसानों की कर्ज समस्या और बाजार पर निर्भरता दिखाई देती है। इसलिए उपनिवेशवादी कृषि नीति के प्रभाव लंबे समय तक बने रहे।

प्रश्न 7. कल्पना कीजिए कि आप 1857 में एक संवाददाता हैं। रानी लक्ष्मीबाई द्वारा झाँसी में किए गए प्रतिरोध पर एक संक्षिप्त समाचार विवरण लिखिए। यह भी दर्शाइए कि यह विद्रोह किस प्रकार आरंभ हुआ, फैला और समाप्त हुआ मुख्य घटनाओं एवं नेताओं को रेखांकित करते हुए एक समय-रेखा या चित्रपट बनाइए।

उत्तर:

विवरण:

झाँसी से समाचार प्राप्त हुआ है कि रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों के विरुद्ध साहसपूर्ण प्रतिरोध किया है। अंग्रेजों ने झाँसी राज्य को अपने अधीन करने का प्रयास किया, जिसका रानी ने कड़ा विरोध किया। रानी ने अपनी सेना संगठित की और वीरता से युद्ध किया। 1857 का विद्रोह मेरठ से आरंभ हुआ और दिल्ली, कानपुर, लखनऊ तथा झाँसी तक फैल गया। रानी लक्ष्मीबाई, नाना साहेब, तात्या टोपे और बहादुर शाह ज़फर जैसे नेताओं ने अंग्रेजों का विरोध किया।

समय-रेखा:

- 1857: मेरठ में विद्रोह आरंभ।
- 1857: दिल्ली में बहादुर शाह ज़फर को नेता माना गया।
- 1857-58: झाँसी में रानी लक्ष्मीबाई का प्रतिरोध।
- 1858: अंग्रेजों ने विद्रोह को दबा दिया।

परिणाम: कंपनी शासन समाप्त हुआ और भारत सीधे ब्रिटिश सरकार के अधीन आया।

प्रश्न 8. कल्पना कीजिए यदि भारत कभी भी यूरोपीय शक्तियों का उपनिवेश नहीं बना होता, तब यह किस प्रकार अपने पथ पर विकसित हुआ होता? इस विषय पर लगभग 300 शब्दों की एक लघु कथा लिखिए।
उत्तर:

लघु कथा: स्वतंत्र भारत का अलग रास्ता

यदि भारत कभी यूरोपीय शक्तियों का उपनिवेश नहीं बना होता, तो उसका विकास अपनी परंपराओं और आवश्यकताओं के अनुसार होता। भारत के राज्य आपसी व्यापार और सहयोग से मजबूत बनते। भारतीय कारीगर, बुनकर और व्यापारी अपने उद्योगों को आगे बढ़ाते।
सूरत, मसुलीपट्टनम और कालीकट जैसे बंदरगाह विश्व व्यापार के बड़े केंद्र बनते। भारतीय वस्त्र, मसाले, धातु और हस्तशिल्प की माँग दुनिया भर में बनी रहती। किसान अपनी जरूरतों के अनुसार खेती करते और उन पर विदेशी शासन का दबाव नहीं होता।
शिक्षा में संस्कृत, फारसी, अरबी और स्थानीय भाषाओं के साथ विज्ञान और गणित का विकास होता। भारतीय ज्ञान परंपरा आधुनिक विचारों से जुड़कर नई दिशा लेती।
राजनीतिक रूप से भारत में कई शक्तिशाली राज्य होते, जो समय के साथ आपसी समझौते करके एक संघ जैसा रूप भी बना सकते थे। समाज में सुधार आंदोलनों के माध्यम से जाति, शिक्षा और महिलाओं की स्थिति में धीरे-धीरे सुधार होता।
इस प्रकार भारत अपनी संस्कृति, व्यापार, कृषि और शिक्षा के आधार पर स्वतंत्र रूप से विकसित होता। उसका विकास शायद धीमा होता, लेकिन वह अपने लोगों की जरूरतों और परंपराओं के अधिक निकट होता।

MUKUTclasses

प्रश्न 9. भूमिका-अभिनय रोल-प्ले एक ऐतिहासिक संवाद का मंचन कीजिए जिसमें एक ब्रिटिश अधिकारी एवं एक भारतीय व्यक्तित्व जैसे दादाभाई नौरोजी के मध्य ब्रिटिश उपनिवेशवाद पर चर्चा हो रही हो।
उत्तर:

ब्रिटिश अधिकारी: हम भारत में कानून, रेल और शिक्षा लाए हैं। हमने भारत को आधुनिक बनाया है।
दादाभाई नौरोजी: यदि ऐसा है तो भारत गरीब क्यों हो रहा है? भारत का धन इंग्लैंड जा रहा है।
ब्रिटिश अधिकारी: रेल और टेलीग्राफ भारत के विकास के लिए बनाए गए हैं।
दादाभाई नौरोजी: इनका मुख्य उपयोग अंग्रेजी व्यापार और शासन को मजबूत करने के लिए हुआ है।
ब्रिटिश अधिकारी: हम भारतीयों को सभ्य बना रहे हैं।
दादाभाई नौरोजी: भारत की अपनी प्राचीन सभ्यता है। हमें शोषण नहीं, स्वशासन चाहिए।
ब्रिटिश अधिकारी: आप क्या चाहते हैं?
दादाभाई नौरोजी: हम न्याय, समानता और भारत के धन पर भारतीयों का अधिकार चाहते हैं।

प्रश्न 10. औपनिवेशिक काल में अपने राज्य या क्षेत्र के किसी स्थानीय प्रतिरोध आन्दोलन जनजातीय, कृषक या रियासती का अन्वेषण कीजिए। एक विवरण या पोस्टर तैयार कीजिए, जिसमें निम्नलिखित बिंदु सम्मिलित हों- क्या इसका कोई विशिष्ट कारण था? आंदोलन का नेतृत्व किसने किया? उनकी माँगें क्या थीं? ब्रिटिश शासन की प्रतिक्रिया क्या थी? आज यह घटना किस प्रकार स्मरण की जाती है जैसे- स्थानीय उत्सवों, गीतों, स्मारकों के माध्यम से?

उत्तर:

स्थानीय प्रतिरोध आंदोलन: संथाल विद्रोह

कारण:

- अंग्रेजी शासन, जमींदारों और साहूकारों द्वारा संथालों का शोषण।
- भूमि छीनना और भारी कर लगाना।
- कर्ज और अन्याय से जनजातीय जीवन प्रभावित होना।

नेतृत्व:

- इस आंदोलन का नेतृत्व सिद्धू और कान्हू मुर्मू ने किया।

माँगें:

- शोषण और अन्याय से मुक्ति।
- अपनी भूमि और अधिकारों की रक्षा।
- साहूकारों और जमींदारों के अत्याचार का अंत।

ब्रिटिश प्रतिक्रिया:

- अंग्रेजों ने विद्रोह को कठोरता से दबाया।
- कई संथाल योद्धा मारे गए।
- बाद में संथाल क्षेत्र के लिए अलग प्रशासनिक व्यवस्था की गई।

आज स्मरण:

- सिद्धू-कान्हू को वीर नायक के रूप में याद किया जाता है।
- उनके नाम पर स्मारक, संस्थान और कार्यक्रम आयोजित होते हैं।

To get notes visit our website
mukutclasses.in